Scheme & Syllabi

of

Bachelor of Arts, B.A. (Hons.) in

Vedic Studies

4 Year (8 Semesters) Course

Department of Vedic Studies

Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya Sagar (M.P.)

Bachelor of Arts, B. A. (Hons.) in Vedic Studies

Department of Vedic Studies proposes a 4-year graduate (Hons.) course in Vedic Studies under the New Education Policy (NEP-2020).

1. Course Objectives:-

1. To explore the hidden knowledge in Vedas and Indian ancient knowledge& culture.
2. To perform a critical and comparative analysis of ancient culture and heritage.
3. To prepare students with in-depth knowledge of old Indian cultural traditions.
4. To develop manpower who can protect, and preserve and carry forward the rich Indian ancient knowledge, life style, and ancient culture.

2. Learning outcomes:-

After completing this course students shall be capable in the following:

1. Aware about ancient Indian culture system.
2. Aware about yoga, astrology, Indian philosophy in reference to Vedas and culture.
3. Know about spirituality and Indian culture.
4. Acquaint with Vedic mathematics and its applications.

3. Course Duration

It will be of 4 years (8-semester program) to be functional as per CBCS and NEP-2020 regulations as laid down in the university ordinance.

4. Intake Capacity

There shall be a maximum of 40 students' intake for an academic session.

5. Reservation Policy

The maximum intake shall be divided into UR, EWS, OBC, SC, ST and PWD categories as per university/ government of India norms applicable to other graduate academic programs.

6. Eligibility

Passed 10+2 degree with any discipline.

7. Admission Procedure

1. There shall be an advertisement of this course in newspapers and the same shall be displayed on university website.
2. The other criterion of admission like written tests and counselling shall be same as adopted by the university for other UG courses.

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar M.P.

8. Award of degree

On successful completion	Semester	Name
One year	Two	Certificate
Two year	Four	Diploma
Three year	Six	Bachelor of Arts
Four year	Eight	Bachelor of Arts (Hons.)

The course will run under the university ordinance applicable for other bachelor degrees in Arts and Humanities modified under NEP-2020.

Fee Structure (For first semester)

S. No.	Heads	Fee
1.	Tuition fee	900
2.	Library fee	250
3.	Sports fee	100
4.	Student Activity fee	100
5.	Medical fee	125
6.	Insurance premium	30
7.	Registration fee	150
8.	IT fee	550
	Total	2205
9.	Caution money	250
	Total fee for first semester	2455
	Total fee for second semester onwards	2205

No practical fee shall be chargeable. Semester fee should be paid at the beginning of the semester.

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Course Scheme

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-111	वैदिक गणित I	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-DSM-112	आयुर्वेद	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-MDM-113	वैदिक विज्ञान	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-AEC-114	भारतीय ज्योर्ति विज्ञान के परिपेक्ष्य में काल निर्धारण	2	0	-	2	20	20	60	100

ME – Mid Exam, IA- Internal Assessment, ESE- End Sem. Exam

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-211	वैदिक गणित II	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-DSM-212	गीता में आत्म प्रबंधन एवं अवसाद निवारण भारतीय शिक्षण पद्धति	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-MDM-213	भारतीय शिक्षण पद्धति	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-SEC-214	योगशास्त्र	2	0	-	2	20	20	60	100

ME – Mid Exam, IA- Internal Assessment, ESE- End Sem. Exam

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar

अधिष्ठाता/DEAN
गणितीय एवं भौतिक विज्ञान अध्ययनशाला
School of Mathematical & Physical Science
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
Dr Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar

Course Scheme

Semester III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-311	वैदिक बीजगणित	5	1	0	6	20	20	40	100
DVS-DSM-312	तर्क संग्रह	5	1	0	6	20	20	40	100
DVS-MDM-313	Basic MATLAB with Vedic Application I	5	1	0	6	20	20	40	100
DVS-SEC-314	वैदिक साहित्य परिचय	2	0	0	2	20	20	40	100

Semester IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-411	वैदिक ज्यामिति	5	1	0	6	20	20	60	100
DVS-DSM-412	तर्कभाषा	5	1	0	6	20	20	60	100
DVS-MDM-413	प्रमाण सिद्धान्त	5	1	0	6	20	20	60	100
DVS-AEC-414	वैदिक साहित्य द्वितीय	2	0	0	2	20	20	60	100

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

अधिष्ठाता/DEAN
गणितीय एवं भौतिक विज्ञान अध्ययनशाला
School of Mathematical & Physical Science
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar

Course Scheme

Semester V

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-511	संस्कृत परिचय	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-DSM-512	भारतीय गणित पंरपरा I	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-MDM-511	रसायन और धातु विज्ञान	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-AEC-511	भारतीय कलाएं	2	0	-	2	20	20	60	100

ME – Mid Exam, IA- Internal Assessment, ESE- End Sem. Exam

Semester VI

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-611	भारतीय काल गणना	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-DSM-612	भारतीय गणित परम्परा II	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-MDM-611	भारतीय संस्कृति	4	2	-	6	20	20	60	100
DVS-SEC-611	प्रायोगिक योग	0	0	2	2	20	20	60	100

ME – Mid Exam, IA- Internal Assessment, ESE- End Sem. Exam

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-111	वैदिक गणित I	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य– (Objectives)

(I) भारतीय ज्ञान परम्परा के विषय का ज्ञान
(II) वैदिक ज्ञान परम्परा के विषय का ज्ञान
(III) वैदिक गणित सम्बन्धी सामान्य परिचय
(IV) गणित के पठन–पाठन की भारतीय विधि
(V) भारतीय गणितज्ञों के विषय में जानकारी

इकाईशः शिक्षण अधिगम – **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – इकाई–1 के अध्ययन से छात्रों को वैदिक गणित के विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त होगी।

(UO-2) – इकाई–2के अध्ययन से वैदिक गणितीय सूत्रों एवं उपसूत्रों का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-3) – इकाई–3 के अध्ययन से छात्रों को गणितीय संक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4) –इकाई–4 के अध्ययन से वैदिक गणित की गुणन विधियों का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-5) – इकाई–5 के अध्ययन से भारतीय गणितज्ञों की मेधा एवं उनके गणितीय योगदानों का ज्ञान प्राप्त होगा।

Unit – I – वैदिक गणित का सामान्य परिचय एवं महत्व
Unit – II – वैदिक गणित के सूत्रों का परिचय एवं उदाहरण
Unit – III –योग, घटाना की संक्रियायें, बीजांक
Unit – IV –गुणन विधियां : एकाधिकेन पूर्वेण विधि, एकन्यूनेन पूर्वेण विधि निखिलं नवतश्चरामं दशतः संयुक्त संचालन
Unit –V –भारतीय गणितज्ञों का सामान्य योगदान

संदर्भ सूची :

(1) भारतीय कृष्ण तीर्थ : वैदिक गणित (मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली, 2001)

(2) बी.जी. हीरोर : भारत का इतिहास गणित और गणितज्ञ

(3) डॉ. व्यवहारे– चौथाईवाले – बोरगांवकर : वैदिक गणित का परिचय

Chairman 20/02/2025
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-112	आयुर्वेद	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य – **(Objectives)**

(1) – आयुर्वेद संबंधी ज्ञान

(2) – आयुर्वेद के विविध आयामों का विस्तृत अध्ययन

(3) – आयुर्वेद की क्रियाओं व उपयोगिता का अध्ययन

(4) – दिनचर्या एवं आहार–विहार में आयुर्वेद का अनुकरण।

(5) – आयुर्वेद की वर्तमान समय में उपयोगिता का अध्ययन।

इकाईशः शिक्षण अधिगम – **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – इकाई–1 के अध्ययन से छात्रों को आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-2) – इकाई–2 के अध्ययन से छात्र आयुर्वेद के विविध आचार्यों के बारे में जानेंगे।

(UO-3) – इकाई–3 के अध्ययन से छात्र आयुर्वेद के विभिन्न आयामों का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4) – इकाई–4 के अध्ययन से छात्र दैनिक जीवन एवं स्वास्थ्य पर आयुर्वेद के गुणों का अध्ययन करेंगे।

(UO-5) – आयुर्वेद की वर्तमान समय में भूमिका को जानकर शोध कार्य एवं जागरूकता बढ़ेगी।

Unit – I – आयुर्वेद का सामान्य परिचय
Unit – II – आयुर्वेद के विविध आचार्यों का परिचय
Unit – III – महाभूत, त्रिदोष, धातु, त्रिमल, त्रयशेदशाग्नि, स्वस्थ का लक्षण
Unit – IV – दिनचर्या, ऋतुचर्या एवं आहार–विहार
Unit – V – आयुर्वेद की वर्तमान प्रसंगिकता

Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-113	वैदिक विज्ञान	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य– **(Objectives)**

(I) – भारतीय शास्त्रों में प्राप्त वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान।

(II) – परमाणु सम्बन्धी अवधारणाओं का ज्ञान एवं आचार्यकणाद के परमाणु मॉडल का ज्ञान

(III) – प्राचीन काल में ध्वनि एवं दृष्टि विज्ञान सम्बंधी अवधारणाओं का अध्ययन।

(IV) – संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विविध ऋषियों एवं आचार्यों के वैज्ञानिक योगदान की जानकारी।

इकाईशः शिक्षण अधिगम – **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से छात्र प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक चिंतन के विषय में जानेंगे।

(UO-2) –सृष्टि की उत्पत्ति विषयक ऊर्जा एवं परमाणु संबंधी अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

(UO-3) – ध्वनि विज्ञान एवं राष्ट्रीय विज्ञान की प्राचीनतम एवं आधुनिक दोनों प्रकार की अवधारणा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

(UO-4) – संस्कृत साहित्य एवं आधुनिक विज्ञान के परस्पर संबंधों के ज्ञान को समझ सकेंगे।

Unit – I वैदिक विज्ञान का सामान्य परिचय
Unit – II – परमाणु सम्बन्धी अवधारणायें, कपिल मुनि के 25 तत्व सांख्य दर्शन
Unit – III – वेदो में रसायन, वेदों में भौतिकी प्राचीन एवं आधुनिक अवधारणाएं
Unit – IV – वेदों में अर्थशास्त्र वेदों में राजनीति

DShukla Shivamurthy 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-AEC-114	भारतीय ज्योतिविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में काल निर्धारण	2	0	-	2	20	20	60	100

उद्देश्य– **(Objectives)**

(I) इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ज्योतिषीय सिद्धांतों की व्यापक समझ विकसित करना है और चार्ट का विश्लेषण करने के लिए इन सिद्धांतों का उपयोग कैसे किया जाता है।

(II) यह पाठ्यक्रम छात्रों को विभिन्न दृश्य प्रणालियों और घटनाओं के समय में उनके उपयोग की सराहना करने में मदद करेगा।

इकाईशः शिक्षण अधिगम – **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1)	1. राशि, ग्रह, विशेष लग्न, नक्षत्र, भाव विश्लेषण की मूल अवधारणाओं को समझना। 2. ज्योतिष में घरों, कारकों और योगों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।
(UO-2)	1. जन्म कुंडली का व्याख्यान करने और दीर्घायु से संबंधित विषयों का विश्लेषण करने कौशल विकसित करना। 2. ग्रहों और राशियों की शक्ति एवं प्रभाव को समझना। 3. विभिन्न कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करके जन्म कुंडली पर अलग–अलग कारकों के प्रभाव को जानना।
(UO-3)	1. विम्सोत्तरी दशा, अशोत्तरी दशा, नारायण दशा, और लग्न केन्द्रादि राशि दशा जैसे विभिन्न दशा प्रणालियों को अध्ययन करना और समझना। 2. चार्ट विश्लेषण में इन दशा प्रणालियों के प्रभाव और महत्व का विश्लेषण करना। 3. ग्रहों की अवधि और चार्ट विश्लेषण के बीच संबंध का अन्वेषण करना।
(UO-4)	1. सुदशा, द्रिग्दशा और निर्याना शूल दशा जैसी अतिरिक्त दशा प्रणालियों का ज्ञान। 2. ज्योतिष में कुण्डली में महादशा, अंतर्दशा प्रत्यन्तर दशा को समझना। 3. इन दशा प्रणालियों के जन्म कुंडली के व्याख्यान पर इनके प्रभाव का विश्लेषण करना।
(UO-5)	1. ज्योतिष में शूल दशा के महत्व और व्याख्यान को समझना। 2. चार्ट विश्लेषणमें कालचक्र दशा की अवधारणा और अनुप्रयोग का अन्वेषणा करना। 3. ज्योतिष में शूल दशा और कालचक्र दशा जन्म कुण्डली विश्लेषण, फलादेय के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।

Unit – I चार्ट विश्लेषणः मूल अवधारणाएं, राशियां, ग्रह, उपग्रह, विशेष लग्न, योग और अष्टवर्ग। कुण्डली के भाव, नक्षत्र विवरण
Unit – II – चार्ट विश्लेषणः चार्ट की व्याख्या, दीर्घायु, ग्रहों की ताकत और राशियों से संबंधित विषय। स्वग्रही, उच्च, नीचग्रह
Unit – III – दशा विश्लेषणः विम्सोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा, नारायण दशा चन्द्र कुण्डली, गृहयोग मांगलिक
Unit – IV –- दशा विश्लेषणः सुदशा, दृगदशा, निर्याण शूल दशा। कुण्डली में ग्रह मैत्री, कारक, महादशा
Unit – V – दशा विश्लेषणः शूल दशा और कालचक्र दशा। कुण्डली विष्लेषण, फलादेय वाचन

संदर्भ सूची :–

(1) पी.वी. आर नरसिम्हा रावः वैदिक ज्योतिष एक एकीकृत दृष्टिकोण सागर प्रकाशन।

(2) विपिन बिहारी : वैदिक ज्योतिष के मूल सिद्धांत, वी.डी. आई.सी ज्योतिषी एस हैंडबुक। लोटस प्रकाशन

20/2/24 DShukla Chairman 20/02/2025

Board of Studies (BoS)
Department of ... Studies
Dr. H.S. ... Vidyalaya

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-211	वैदिक गणित II	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य–**(Objectives)**

(I) वैदिक गणित में भाग विधियों का अध्ययन।

(II) वैदिक गणित में महत्तम एवं लघुत्तम समापवर्तक विधियों की जानकारी।

(III) मेरू प्रस्तार, वर्ग, वर्गमूल, घनमूल का अध्ययन करना।

(IV) वैदिक गणित में विभाज्यता का अध्ययन।

(V) आवर्ती दशमलव का सामान्य परिचय।

इकाईशः शिक्षण अधिगम –**(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – वैदिक गणित की भाग विधियों का अध्ययन कर अपने ज्ञान पद्धति को तीव्र बना सकेंगे।

(UO-2) –इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से छात्र महत्तम और लघुत्तम समाप्वर्तक की विधियों को जानेंगे।

(UO-3) – मेरू प्रस्तार, वर्ग, घन, वर्गमूल, घन मूल विधियां संबंधी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

(UO-4) – वैदिक गणित में विभाज्यता के अध्ययन को जानेंगे।

(UO-5) – वैदिक गणित विधि से आवर्ती दशमलव का अध्ययन।

Unit – I वैदिक गणित में भाग विधियॉं
Unit – II – महत्तम एवं लघुत्तम समापवर्तक
Unit – III मेरू प्रस्तार, वर्ग, घन, वर्गमूल, घनमूल
Unit – IV — भाजकः एकाधिकेन पूर्वण विधि। एकन्यूनेन पूर्वेण विधि (वेष्टनम)
Unit – V – आवर्ती दशमलवः सामान्य परिचय–1,3,7,9 पर समाप्त होने वाला भाजक

संदर्भ सूची :

(1) भारतीय कृष्ण तीर्थ : वैदिक गणित (मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली, 2001)

(2) बी.जी. हीरोर : भारत का इतिहास गणित और गणितज्ञ

(3) डॉ. व्यवहारे– चौथाईवाले – बोरगांवकर : वैदिक गणित का परिचय

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-212	गीता में आत्म प्रबंधन एवं अवसाद निवारण	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य–(Objectives)

(I) गीता अध्याय 3–42 एवं 15–7 का विशेष अध्ययन करना।

(II) गीता अध्याय 2–3 एवं 4 से मन का अध्ययन करना।

(III) त्रिगुण सिद्धांत की जानकारी।

(IV) अंतर्द्वंद की प्रकृति का अध्ययन एवं निवारण।

(V) गीता द्वारा आदर्श व्यक्तित्व के विकास की अवधारणा।

इकाईशः शिक्षण अधिगम –**(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – गीता अध्ययन से इंद्रिय, मन, बुद्धि, आत्म तत्व की कमिक श्रेष्ठता का ज्ञान प्राप्त करना।

(UO-2) – मन विषयक अध्ययन करना।

(UO-3) – त्रिगुण सिद्धांत का ज्ञान प्राप्त करना।

(UO-4) – अन्तर्द्वन्द्व प्रकृति एवं उसके निवारण का अध्ययन करना।

(UO-5) – गीता के अध्ययन से आदर्शजीवन व व्यक्तित्व को जानेंगे।

Unit – I इन्द्रिय, मन, बुद्धि, आत्मतत्व का स्वरूप विवेचन – अध्याय–3–42 अध्याय – 15–7
Unit – II –मन विषयक विविध अवधारणाएँ, मन के नियंत्रण उपाय – 2–3 अध्याय –4–
Unit – III- त्रिगुण का सिद्धान्त –XII-5-6, XIV-5-8, 11-1, XIV-17
Unit – IV — अन्तर्द्वन्द्व की प्रकृति और उसका निवारण –I-1, IV, 16, I-45, II-6
Unit – V – गीता द्वारा आदर्श व्यक्तित्व निर्माण।

DShukla
20/2/2025
Shivani
20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-213	भारतीय प्राचीन शिक्षण पद्धति	4	2	-	2	20	20	60	100

उद्देश्य–**(Objectives)**

(I) उद्देश्य शिक्षा के उद्देश्य से चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास का अध्ययन करना।

(II) नए आचारों की शिक्षा में अनुप्रयोगों की जानकारी।

(III) चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में आचार व्यवहार की अवधारणा।

(IV) पंचकोष से व्यक्तित्व के समग्र विकास विधि का अध्ययन।

(V) वर्तमान भारतीय शिक्षण पद्धति पिरामिड संरचना का विस्तृत जानकारी।

इकाईशः शिक्षण अधिगम –**(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – शिक्षा से चरित्र निर्माण एवं समग्र व्यक्तित्व विकास करना।
भारतीय शिक्षण पद्धति

(UO-2) – शिक्षा नवाचारों की जानकारी प्राप्त करना।

(UO-3) – चरित्र निर्माण हेतु आचार व्यवहार सिखाना।

(UO-4) – पंचकोष से व्यक्तित्व के समग्र विकास का ज्ञान प्राप्त करना।

(UO-5) – भारतीय शिक्षण पद्धति की वर्तमान पिरामिड संरचना से व्यक्तित्व विकास के चरणों के बारे में जानेंगे।

Unit – I– शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण एवं समग्र व्यक्तित्व विकास
Unit – II –शिक्षा में नवाचार
Unit – III – चरित्र निर्माण हेतु आचार–व्यवहार
Unit – IV — व्यक्तित्व के समग्र विकास में पन्चकोष की अवधारणा
Unit – V – भारतीय शिक्षण पद्धति की वर्तमान पिरामिड संरचना तथा व्यक्तित्व विकास की अवधारणा

DShukla Chairman Shivani 20/02/2025
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-SEC-214	योगशास्त्र	2	0	-	2	20	20	60	100

उद्देश्य–**(Objectives)**

(I) पातंजल योगसूत्र (1–10) सूत्र का अध्ययन करना।

(II) पातंजल योगसूत्र (11–20) सूत्र का अध्ययन करना।

(III) अष्टांग योग की चर्चा

(IV) गीता में योग की भूमिका की जानकारी प्राप्त करना।

(V) महर्षि पतंजलि के योगदान की जानकारी।

इकाईशः शिक्षण अधिगम –**(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – पातंजल योग सूत्र (1–10) सूत्रों का व्यावहारिक ज्ञान के रूप में प्रयोग करना।

(UO-2) – पातंजल योग सूत्र (11–20) का ज्ञान अष्टांग योग की चर्चा करना।

(UO-3) – गीता में योग की महत्ता को समझना

(UO-4) – महर्षि पतंजलि के जीवन का ज्ञान प्राप्त करना।

(UO-5) – महर्षि पतंजलि के योगदान की जानकारी प्राप्त करना।

Unit – I– पातन्जलि योगसूत्र, (1–10) सूत्र समाधिपाद
Unit – II –पातन्जलि योगसूत्र, (11–20) सूत्र समाधिपाद
Unit – III – अष्टान्ग योग
Unit – IV – गीता में योग विषय अवधारणा
Unit – V – योग विषय में महर्षि पतंजलि

DShukla
20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-311	वैदिक बीजगणित	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य

1. द्विघातीय और घनात्मक समीकरणों के गुणन के लिए ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम विधि में निपुणता विकसित करना।
2. बहुपदों के विभाजन के लिए परावर्त्य योजयेत विधि को समझना और लागू करना।
3. मिश्रित गणनाओं, अवकलन और घनात्मक समीकरणों के कारककरण तथा महत्तम समापवर्तक एवं लघुत्तम समापवर्तक की गणना में मेरू प्रसार विधि को एकीकृत करना।
4. जटिल वास्तविक समीकरणों को सरल बनाने में आंशिक भिन्नों को समझना और लागू करना।
5. दो या तीन चार के द्विघातीय समीकरणों और एकघातीय समीकरणों को हल करना।

इकाईवार अधिगम परिणाम

1. छात्र ऊर्ध्वतिरग्भ्याम विधि का उायोग करके द्विघातीय और घनात्मक समीकरणों का गुणन कुशलता से कर सकेंगे।
2. छात्र परावर्त्य योजयेत विधि को सही तरीके से लागू करके बहुपद विभाजन समस्याओं को हल कर सकेंगे।
3. छात्र मिश्रित गणनाओं, अवकलन और घनात्मक समीकरणों के गुणनखंड में प्रभावी रूप से प्रदर्शन करेंगे और महत्तम समापवर्तक एवं लघुत्तम समापवर्तक की गणना करेंगे।
4. छात्र आंशिक भिन्नों का उपयोग करके जटिल वास्तविक समीकरणों को सरल बनाएंगे।
5. छात्र विभिन्न विधियों का उपयोग करके द्विघातीय और एक घातीय समीकरणों को हल करेंगे, जिनमें प्रतिस्थापन, उन्मूलन और मैट्रिक्स विधियाँ शामिल हैं।

इकाई:– 1 गुणन (1 या 2 चर वाले द्विघातीय और घनात्मक समीकरण): ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम् विधि, मिश्रित गणनाएँ
इकाई:– 2 विभाजन विधि और अनुप्रयोग: परावर्त्य योजयेत विधि, मिश्रित गणनाएँ
इकाई:– 3 मेरू प्रसार, मिश्रित गणनाएँ, अवकलन का उपयोग, गुणनखंड (घनात्मक समीकरण), महत्तम समापवर्तक एवं लघुत्तम समापवर्तक
इकाई:– 4 आंशिक भिन्न
इकाई:– 5 समीकरणों का समाधान (द्वितीय समीकरण/दो या तीन चर के एकघातीय समीकरण)

संदर्भः

1. वैदिक गणित, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली।
2. वैदिक गणितः विहंगम दृष्टि–1, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
3. वैदिक गणित प्रणेता, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
4. वैदिक गणितः भूत, वर्तमान और भविष्य, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
5. बीजगणित, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।
6. भारतीय गणितज्ञ, शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

20/2/25 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya

Semester III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-312	तर्कसंग्रह	5	1	0	0	20	20	60	100

उद्‌देश्य – (Objectives):

(1) – वैशेषिक दर्शन की तत्व एवं ज्ञानमीमांसा का ज्ञान।

(2) – तर्क एवं प्रमाण विषयक ज्ञान।

(3) – भारतीय वाद परम्परा की स्थापना विषयक मूल ज्ञान।

(4) – भारतीय शास्त्र परम्परा के ग्रन्थों के अध्ययन की समझ।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 तर्कसंग्रह ग्रन्थ का सामान्य परिचय एवं पदार्थ की अवधारणा, वर्गीकरण के महत्व का ज्ञान, पदार्थ लक्षण।
(UO-2) - इकाई–2 द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय एवं अभाव का लक्षण एवं विभाग।
(UO-3) - इकाई–3 हेत्वाभास एवं सद्‌हेतु के आधार पर तर्क–परम्परा।
(UO-4) - इकाई–4 गुण–प्रकरण में वर्णित गुरूत्व के सिद्धान्त की वैज्ञानिकता।
(UO-5) - इकाई–5 आचार्य अन्नमभट्ट के भारतीय ज्ञान परम्परा को योगदान।

Unit - I	तर्कसंग्रह : सामान्य परिचय, पदार्थ।
Unit - II	सप्तपदार्थों का वर्गीकरण एवं लक्षण।
Unit - III	हेत्वाभास, हेत्वाभास के प्रकार एवं उदाहरण।
Unit - IV	गुरूत्व गुण की वैज्ञानिकता।
Unit - V	भारतीय ज्ञान परम्परा में आचार्य अन्नमभट्ट का योगदान।

Reference/Text Book.

1– तर्कसंग्रह, डॉ. काशीराम, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, 2016

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-313	Basic MATLAB with Vedic Applications I	4	2	-	6	20	20	60	100

(Objectives)

1. To introduce students to the MATLAB environment, including its user interface and basic features.
2. To teach students how to define and manipulate variables, arrays, and perform basic operations in MATLAB.
3. To familiarize students with control flow constructs and the creation of functions and scripts in MATLAB.
4. To apply MATLAB programming to implement Vedic mathematical operations, focusing on Vedic multiplication.
5. To apply MATLAB for text processing and transliteration.

(Unit wise learning outcomes)

1. Students will be able to identify and navigate the main components of the MATLAB interface.
2. Students will be able to create and manipulate arrays and matrices effectively.
3. Students will be able to implement conditional statements and loops to control program execution.
4. Students will be able to code and validate Vedic multiplication algorithms in MATLAB.
5. Students will be able to implement algorithms for the transliteration of Sanskrit texts using MATLAB.

Unit:-1. MATLAB – Introduction to MATLAB and its environment.
Unit:-2. Variables, arrays, and basic operations in MATLAB.
Unit:-3. Conditional statements and loops in MATLAB. Introduction to functions and scripts in MATLAB.
Unit:-4. MATLAB coding for Vedic mathematical operations. Implementing Vedic multiplication.
Unit:-5. Text processing in MATLAB. Transliteration of Sanskrit texts.

Suggested Readings:

1. Stephen J. Chapman, Matlab programming for engineers, 2003.
2. Introduction to MATLAB for Engineers by William J. Palm III.
3. Vedic Mathematics by Bharati Krishna Tirthaji.

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
H.S. Gour Vishwavidyalaya
20/02/2025

Semester III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-SEC-314	वैदिक साहित्य परिचय	2	0	0	2	20	20	60	100

उद्देश्य – (Objectives):

(1) – वैदिक साहित्य का विशद परिचय

(2) – वैदिक साहित्य के घटकों यथा संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद का परिचय

(3) – वेदांग का परिचय

(4) – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष का महत्व

(5) – ऋग्वेद का मंडल कम एवं अष्टक कम विभाग

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 के अध्ययन से वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।

(UO-2) - इकाई–2 के अध्ययन से वैदिक साहित्य के घटकों का विशेष परिचय प्राप्त होगा।

(UO-3) - इकाई–3 के अध्ययन से वेदांग साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।

(UO-4) - इकाई–4 के अध्ययन से वेदंग साहित्य के घटकों शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-5) – इकाई–5 के अध्ययन से ऋग्वेद के विभाजन विषयक प्राप्त होगा।

Unit - I	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय, वेदों का अपौरूषेयत्व, वेदों की सार्वभौमिकता एवं सार्वकालिकता
Unit - II	वैदिक साहित्य के घटक, संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद, प्रत्येक संहिता से संबंधित ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद का परिचय
Unit - III	वेदांग साहित्य का सामान्य परिचय
Unit - IV	वेदांग साहित्य के अन्तर्गत शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष की वेद के साथ अंग अंगी संबंध एवं परिचय
Unit - V	ऋग्वेद की संरचना, विभाजन, सूक्त संख्या, मंत्र संख्या, अष्टक कम एवं मंडल कम विभाजन का वर्णन।

संदर्भ / सहायक ग्रंथ

1– संस्कृत साहित्य का इतिहास, लेखक श्री उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंभा प्रकाशन

2– वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय

Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-411	वैदिक ज्यामिति	4	2	0	6	20	20	60	100

उद्देश्य

1. बौधायन संख्या (BN) की आवधारणा और इसके विभिन्न ज्यामितीय और त्रिकोणमितीय संदर्भों में अनुप्रयोग को समझना।
2. त्रिकोणमितीय अनुपातों की मौलिक परिभाषाओं और पहचान को समझना और उनके अनुप्रयोगों को जानना।
3. निर्देशांक ज्यामिति में विभिन्न प्रकार की सीधी रेखाओं का अध्ययन करना और उनकी समीकरणों और गुणों को समझना।
4. सम्मिश्र संख्याओं पर संचालन सीखना, जिसमें गुणा, भाग और वर्गमूल निकालना शामिल है।
5. ज्यामिति और गणित के क्षेत्र में भारतीय गणितज्ञों के योगदान की सराहना और समझ करना।

इकाईवार अधिगम परिणाम

1. छात्र कोण की बौधायन संख्या की गणना कर सकेंगे और इसे पूरक कोणों, कोणों के योग और अंतर, और अर्ध कोणों के BN को खोजने के लिए लागू कर सकेंगे।
2. छात्र प्राथमिक त्रिकोणमितीय अनुपातों को परिभाषित कर सकेंगे और संबंधित गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए त्रिकोणमितीय पहचान का उपयोग कर सकेंगे।
3. छात्र विभिन्न प्रकार की सीधी रेखाओं के समीकरणों, जैसे ढा–अवरोध रूप, बिंदु–ढाल रूप, और मानक रूप, को व्युत्पन्न और विश्लेषित कर सकेंगे।
4. छात्र सम्मिश्र संख्याओं पर गणितीय संचालन और उनके वर्गमूल निकालने में निपुण हो जाएंगे, जिससे उनकी सम्मिश्र संख्या सिद्धांत में समस्या–समाधान कौशल में वृद्धि होगी।
5. छात्र प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञों जैसे भास्कराचार्य, माधवन, परमेश्वर, भारती कृष्ण तीर्थ, और बौधायन के योगदान और उनके आधुनिक गणित पर प्रभाव को समझ सकेंगे।

इकाई:– 1 बौधायान संख्या (BN) की अवधारणा : कोण की BN, किसी स्थिरांक का BN में गुणन, पूरक कोणों की BN, कोणों के योग और अंतर $(\alpha + \beta)$ की BN, अर्ध कोण की BN
इकाई:– 2 त्रिकोणमितिः त्रिकोणमितीय अनुपातों की परिभाषाएँ, त्रिकोणमितीय पहचान
इकाई:– 3 निर्देशांक ज्यामितिः सीधी रेखाओं के विभिन्न प्रकार
इकाई:– 4 सम्मिश्र संख्याएँः गुणन, भाग और वर्गमूल
इकाई:– 5 भारतीय गणितज्ञों का योगदान (ज्यामिति के संदर्भ में)ः भास्कराचार्य, माधवन, परमेश्वर, भारती कृष्ण तीर्थ, बौधायन

संदर्भः

1. वैदिक गणित, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली।
2. वैदिक गणितः विहंगम दृष्टि–1, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
3. वैदिक गणित प्रणेता, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
4. वैदिक गणितः भूत, वर्तमान और भविष्य, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
5. बीजगणित, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।
6. भारतीय गणितज्ञ, शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-412	तर्कभाषा	5	1	0	6	20	20	60	100

उद्देश्य – (Objectives):

(1) – तर्कभाषा ग्रन्थ के चयनित विषयों का अध्ययन।

(2) – न्याय दर्शन में पदार्थ विषयक का ज्ञान।

(3) – न्याय दर्शन में प्रमाण एवं प्रमेय का ज्ञान।

(4) – तर्कभाषा में वर्णित हेत्वाभास का ज्ञान।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 के अध्ययन से तर्कभाषा का सामान्य परिचय का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-2) - इकाई–2 के अध्ययन से तर्कभाषा में वर्णित पदार्थों का नाम एवं उनके लक्षण का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-3) - इकाई–3 के अध्ययन से तर्कभाषा में प्रमाण के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4) - इकाई–4 के अध्ययन से प्रत्यक्ष प्रमाण के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-5) - इकाई–5 के अध्ययन से तर्कभाषा में वर्णित हेत्वाभास का ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई–1	तर्कभाषा का सामान्य परिचय
इकाई–2	तर्कभाषा में वर्णित पदार्थों का नाम एवं उनके लक्षण
इकाई–3	तर्कभाषा में प्रमाण का स्वरूप (केवल नाम एवं सामान्य परिचय)
इकाई–4	प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप एवं लक्षण का विवेचन
इकाई–5	तर्कभाषा में वर्णित हेत्वाभास का विवेचन

Reference/Text Book:

1. तर्कभाषा, श्रीनिवास शास्त्री, चौखम्भा प्रकाशन।
2. तर्कभाषा, बद्रीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास।

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

20/02/2025

Semester IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-413	प्रमाण सिद्धान्त	5	1	0	6	20	20	60	100

उद्देश्य – (Objectives):

(1) – भारतीय दर्शनों में प्रमाण्य विषयक सिद्धान्तों का ज्ञान।

(2) – प्रमाण मीमांसा का ज्ञान।

(3) – विविध दार्शनिक सम्प्रदायों में प्रमाण्य विषयक मतों का ज्ञान।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 के अध्ययन से प्रमाण विषयक व्यापक ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-2) - इकाई–2 के अध्ययन से चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-3) - इकाई–3 के अध्ययन से न्याय–वैशेषिक दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4) - इकाई–4 के अध्ययन से सांख्य–योग दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-5) - इकाई–5 के अध्ययन से पूर्व मीमांसा–वेदान्त दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई–1	भारतीय दर्शन में प्रमाण का स्वरूप एवं अवधारणा प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि
इकाई–2	चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शनों में प्रमाण–मीमांसा
इकाई–3	न्याय–वैशेषिक दर्शन में प्रमाण मीमांसा
इकाई–4	सांख्य–योग दर्शन में प्रमाण मीमांसा
इकाई–5	पूर्व मीमांसा–वेदान्त दर्शन में प्रमाण मीमांसा

Reference/Text Book.

1. भारतीय दर्शन, चन्द्रधर शर्मा, न्यू ईस्टर्न बुक लिंकर्स।
2. Introduction to Indian Philosophy, Dutta and Chaterjee.

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-AEC-414	वैदिक साहित्य (द्वितीय)	2	0	0	2	20	20	60	100

उद्देश्य – (Objectives):

(1) – वैदिक सूक्तों एवं संवादों का परिचय कराते हुए वैदिक साहित्य के महत्व का प्रतिपादन करना।

(2) – वैदिक सूक्त – अग्नि, इन्द्र, उषा के चयनित मंत्रों का अनुवाद एवं आधुनिक संदर्भ में इनका महत्व समझना।

(3) – वैदिक सूक्त – शिवसंकल्प सूक्त का मनोवैज्ञानिक महत्व स्पष्ट करना।

(4) – वैदिक सूक्त – सामनस्यम सूक्त का पारिवारिक महत्व समझाना।

(5) – वैदिक सूक्त – नासदीय, पर्यावरण सूक्त के अध्ययन से सृष्टि उत्पत्ति एवं पर्यावरण चेतना के प्रति जागरूकता।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 के अध्ययन से वैदिक सूक्तों एवं संवाद सूक्तों का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।

(UO-2) - इकाई–2 के अध्ययन से अग्नि, इन्द्र एवं उषा सूक्त के चयनित मंत्रों का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-3) - इकाई–3 के अध्ययन से शिवसंकल्प सूक्त का मनोवैज्ञानिक महत्व एवं मन की शक्ति का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-4) - इकाई–4 के अध्ययन से सामानस्यम् सूक्त के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्रों का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-5) – इकाई–5 के अध्ययन से सृष्टि उत्पत्ति विषयक वैदिक विमर्श एवं पर्यावरण चेतना विषयक परिचय प्राप्त होगा।

Unit - I	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय, सूक्तों एवं संवाद सूक्तों की परंपरा, का परिचय
Unit - II	अग्नि, इन्द्र, उषा सूक्तों का परिचय एवं मंत्रशः अध्ययन
Unit - III	शिवसंकल्प सूक्त, मंत्र अध्ययन, मन की शक्ति एवं मन का महत्व
Unit - IV	सामानस्यम सूक्त, मंत्र अध्ययन, सामाजिक एकता एवं पारिवारिक एकता के सूत्रों का प्रतिपादन
Unit - V	नासदीय सूक्त एवं पर्यावरण सूक्त – मंत्र अध्ययन, सृष्टि उत्पत्ति विषयक विमर्श, पर्यावरण चेतना विषयक विमर्श

संदर्भ / सहायक ग्रंथ

1– संस्कृत साहित्य का इतिहास, लेखक श्री उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंभा प्रकाशन

2– वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय

20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester V

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-511	संस्कृत परिचय	4	2	0	6	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) – माहेश्वर सूत्र का अध्ययन ।

(2) – स्त्रीलिंग, पुल्लिंग की मूलभूत समझ विकसित करना ।

(3) – शब्द रूप का विस्तार पूर्वक अध्ययन ।

(4) – हलन्त स्त्रीलिंग, हलन्त पुल्लिंग का सामान्य अध्ययन

(5) – सर्वनाम का अध्ययन

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) माहेश्वर सूत्र – प्रत्याहार, व्यंजन, उच्चारण, स्थान, की अवधारणा को समझना

(UO-2) शब्द रूप, पुल्लिंग-देव , राम, कवि, गुरु, पितृ, स्त्रीलिंग- मति, धेनु, मातृ, लता, नदी क़े प्रयोग।

(UO-3) शब्द रूप का विस्तृत अध्ययन।

(UO-4) हलन्त पुल्लिंग , हलन्त नपुंसकलिंग का विस्तृत समझ।

(UO-5) सर्वनाम - अस्मद्, युष्मद्, तद् का विस्तृत अध्ययन।

इकाई - 1	माहेश्वर सूत्र, प्रत्याहार, स्वर ,व्यंजन, उच्चारण - स्थान ।
इकाई - 2	शब्द रूप, पुल्लिंग -देव, राम, कवि, गुरु, पितृ, स्त्रीलिंग-मति, धेनु, मातृ, लता, नदी ।
इकाई - 3	शब्द रूप - हलन्त पुल्लिंग, महत्, राजन् , आत्मन्, बह्मन् ।
इकाई - 4	हलन्त स्त्रीलिंग – वाच्, सरित , लक्ष्मी हलन्त नपुंसकलिंग – जगत्, मनस्, बह्मन्, नामन्।
इकाई - 5	सर्वनाम - अस्मद् , युष्मद्, तद् ।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. लघुसिद्धांत कौमुदी. डॉ सत्यपाल सिंह, शिवालिक प्रकाशन दिल्ली।

2. रचनानुवाद कौमुदी, डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

DShukla Shivamkhare 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester V

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-512	भारतीय गणित परम्परा I	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) - भारतीय गणित परम्परा के महत्व का ज्ञान
(2) - आर्यभट्ट एवं भास्कराचार्य का भारतीय गणित को योगदान का ज्ञान

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – वैदिक साहित्य में वर्णित ज्यामिति एवं बोधायन प्रमेय का ज्ञान।
UO-2 – आर्यभट्ट विरचित आर्यभटीयम ग्रंथ का अध्याय क्रम संयोजन एवं अंकगणित के उपयोग का अध्ययन।
UO-3 – भास्कराचार्य कृत लीलावती का परिचय एवं लीलावती में वर्णित गुणन की विधियों का ज्ञान।
UO-4 – परिधि–व्यास के अनुपात पर भारतीय गणितज्ञों का योगदान एवं पाई (π) नामकरण के विषय में अध्ययन।
UO-5 – भारतीय गणित परम्परा का ज्ञान।

इकाई – 1	शुल्वसूत्रों में वर्णित ज्यामिति, बोधायन–पाइथागोरस प्रमेय
इकाई – 2	आर्यभटीयम सामान्य परिचय एवं आर्यभटीयम में अंकगणित का परिचय
इकाई – 3	लीलावती का परिचय लीलावती में गुणन की विविध विधियॉं का परिचय
इकाई – 4	π(पाई) का अविष्कार एवं भारतीय योगदान (परिधि–व्यास अनुपात)
इकाई – 5	गणित को भारतीय विद्वानों का योगदान

Reference/Text Book.

1– चार शुल्वसूत्र, डॉ. रघुनाथ पुरुषोत्तम कुलकर्णी, महर्षि संदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान।
2– आर्यभटीयम, आचार्य आर्यभट्ट, चौखम्भा प्रकाशन, बाराणसी।
3– लीलावती, पं. सीताराम शुक्ल, मोतीलाल बनारसी दास।

Essential e-resourses:

Link- NPTEL :: Mathematics - Mathematics in India - From Vedic Period to Modern Times

Chairman 20/02/2025
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester V

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-511	रसायन और धातु विज्ञान	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) दर्शन के अंतर्गत रसायन शास्त्र के सिद्धांत का अध्ययन

(2) सांख्य पातंजल प्रणाली के रसायन और धातु विज्ञान का सामान्य परिचय

(3) प्राचीन भारतीय आयुर्विज्ञान का अध्ययन

(4) आयुर्विज्ञान में रासायनिक योग का विस्तृत अध्ययन

(5) वेदान्त, बौद्धों एवं जैनों के परमाणु सिद्धांत का ज्ञान

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1)- इकाई- 1 के अनुसार न्याय वैशेषिक रसायन शास्त्र सिद्धांत की समझ ।

(UO-2)- इकाई-2 के अनुसार सांख्य पातंजल प्रणाली का ज्ञान

(UO-3)- इकाई-3 के अनुसार प्राचीन भारत के आयुर्विज्ञान में रसायन विज्ञान का अध्ययन ।

(UO-4)- इकाई-4- के अनुसार आयुर्विज्ञान रसायनिक योग में आण्विक गुण रंगों का गुणधर्म आदि का ज्ञान ।

(UO-5)- इकाई-5- के अनुसार वेदांत के दृष्टिकोण से पदार्थ एवं बौद्ध एवं जैनों के परमाणु सिद्धांत का ज्ञान ।

Unit -1	न्याय वैशेषिक में रसायन शास्त्र, सिद्धांत परमाणु संयोजन का सिद्धांत
Unit-2	सांख्य पातंजल प्रणालीः प्रकृति मूल घटक एवं उनके अन्तः क्रियाएं, ऊर्जा का संरक्षण एवं ऊर्जा का रूपांतरण, मूलभूत परमाणु इकाई ।
Unit-3	प्राचीन भारत के आयुर्विज्ञान में रसायन विज्ञान बृहत संहिता में वज्रलेप/ वज्रसंघात बनाना : गंध युक्ति
Unit-4	पंचीकरण का सिद्धांत, रस रत्न समुच्चय में वर्णित जस्ता आसवन, अम्ल और क्षार अवधारणा ।
Unit -5	बौद्धों एवं जैनों का परमाणु सिद्धांत।

Reference / Text Book

1- दर्शन शास्त्र की परम्परा में भौतिक विज्ञान – डॉ. सुद्युम्न आचार्य ।
2- A History of Hindu Chemistry – Praphulla Chandra Ray.

D Shukla   Shivam [signature] 20/02/2025   [signature] 20/2/25

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester V

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-AEC -511	भारतीय कलाएं	2	0	0	2	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) भारतीय नाट्य-शास्त्र अभिनय दर्पण का परिचय

(2) नवरस का अध्ययन

(3) भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय

(4) UNESCO की ICH सूची में प्रतिनिधित्व करने वाली विधाओं और त्यौहारों का परिचय ।

(5) क्षेत्रीय अभिमंच का परिचय ।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) इकाई-1 भरत मुनि के नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण का अध्ययन

(UO-2) इकाई - 2 नवरस का अध्ययन

(UO-3) इकाई-3 के अनुसार भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय।

(UO-4) इकाई-4 के अनुसार UNESCO की ICH सूची में उपस्थित भारतीय कला और त्यौहारों का नामांकन

(UO-5) इकाई-5 के अनुसार क्षेत्रीय मंचकला का अध्ययन ।

इकाई - 1	भरत मुनि के नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण का सामान्य परिचय
इकार्ड - 2	नवरस का वर्णन
इकाई - 3	भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय
इकाई - 4	UNESCO की ICH सूची में प्रतिनिधित्व करने वाले भारतीय कला विधाओं तथा सांस्कृतिक त्यौहारों का वर्णन नामांकन प्रक्रिया का महत्व ।
इकाई - 5	क्षेत्रीय मंचकला अभिनय का परिचय- कुड़ीअट्टम, यक्षगान, जत्रा लैहारोवा, टोय्यम अकियनात, पांडवानी, चिंदू , भागवत भांड को जानना और अन्य पारंम्पारिक ग्रंथों का कला विधाओं का प्रभाव।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. भारतीय कला, उदयनारायण राय, लोक भारती प्रकाशन ।
2. भारतीय कला, वासुदेवशरण अग्रवाल, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी ।

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

20/02/2025

Semester VI

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-611	भारतीय काल गणना	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) समय के मान, विभाजन का सामान्य परिचय

(2) तैत्तिरीय ब्राह्मण का अध्ययन

(3) सामान्य समय गणना का ज्ञान

(4) भारतीय कैलेण्डर प्रणाली के विषय में जागरूकता

(5) राष्ट्रीय कैलेण्डर में विभिन्न संवत् का ज्ञान

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) इकाई-1 के अनुसार समय के मान, विभाजन, वर्ष, दिन का विस्तृत अध्ययन ।

(UO-2) इकाई-2 के अनुसार तैत्तिरीय ब्राह्मण का अध्ययन।

(UO-3) इकाई 3 के अनुसार सामान्य समय गणना चाँद, दिवस, शोवियन वर्ष विक्रम संवत् आदि का ज्ञान।

(UO-4) इकाई 4 के अनुसार पंचांग के 5 तत्व का ज्ञान।

(UO-5) इकाई 5 के अनुसार भारतीय कैलेण्डर में नक्षत्र, दिनदर्शिका का ज्ञान।

इकाई - 1	समय के मान, वेद के समय से विभाजन, वर्ष महीने और दिन।
इकाई - 2	तैत्तिरीय ब्राह्मण में 13 महीनों के नाम, 12 अर्धमाहो के नाम, चांद्र वर्ष के 354 दिन, महीने और अधिकमास।
इकाई - 3	सामान्य समय गणना के तरीके, चांद्र सौर दिवस, सौर-वर्ष, चन्द्र-सौर वर्ष, सावन दिन।
इकाई - 4	भारतीय कैलेण्डर प्रणाली पंचांग के 5 तत्व संगणना, नक्षत्र, तिथि, योग करण और वार।
इकाई - 5	सूर्य-नक्षत्र, सौर दिनदर्शिका (कैलेंडर), विक्रम संवत् और शक संवत-राष्ट्रीय कैलेंडर (राष्ट्रीय दिनदर्शिका)

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

(1) भारतीय काल गणना का संक्षिप्त परिचय - ज्यो० पंडित देवकीनन्दन खेडवाल , फतेहपुर राजस्थान।

D Shukla Shivamurthy 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester VI

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-612	भारतीय गणित परम्परा II	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

1 – भारतीय गणितीय प्रणालियों और संख्यात्मक पद्धतियों की मूलभूत समझ विकसित करना।

2 – विभिन्न अंकगणितीय प्रणालियों, जैसे आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि पद्धतियों का विश्लेषण करना।

3 – ब्रह्मगुप्त के गणितीय योगदानों, जैसे धनात्मक, ऋणात्मक और शून्य संख्याओं के गुणों, रैखिक और द्विघात समीकरणों के हल, तथा चक्रीय चतुर्भुज की अवधारणा को अध्ययन करना।

4 – पंगला के छंदशास्त्र में गणितीय अवधारणाओं और बाइनरी प्रणाली के बीच संबंध को समझना।

5 – नारायण पंडित की गणितकौमुदी के महत्वपूर्ण गणितीय योगदानों, विशेष रूप से भारत में मैजिक स्क्वायर की अवधारणा का अध्ययन करना।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – दशमलव स्थान मान प्रणाली और वेदों में संख्याओं की अवधारणा को समझना। बड़ी संख्याओं (कोटि से महा–औघ, अक्षौहिणी आदि) की गणना की प्रक्रिया को सीखना।

UO-2 – आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि प्रणालियों के मूलभूत सिद्धांतों की तुलना और विश्लेषण करना।

UO-3 – ब्रह्मगुप्त के गणितीय योगदान, जैसे धनात्मक, ऋणात्मक और शून्य संख्याओं की विशेषताएँ, रैखिक और द्विघात समीकरणों के हल, तथा चक्रीय चतुर्भुज की अवधारणा को समझना।

UO-4 – पिंगला के छंदशास्त्र में प्रयुक्त गणितीय विधियों और बाइनरी प्रणाली के बीच संबंध को समझना एवं आधुनिक गणित में इसकी प्रासंगिकता को पहचानना।

UO-5 – नारायण पंडित की गणितकौमुदी के प्रमुख गणितीय योगदानों का विश्लेषण करना और भारत में मैजिक स्क्वायर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना।

इकाई – 1	दशमलव स्थान मान प्रणाली –वेदों में संख्याएँ, पारंपरिक साहित्य से बड़ी संख्याओं (कोटि से महा–औघ, अक्षौहिणी और अन्य नामित अंक) की गणना।
इकाई – 2	अंकगणित की तीन अलग–अलग प्रणालियाँ – आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि प्रणालियाँ ,
इकाई – 3	ब्रह्मगुप्त– धनात्मक, ऋणात्मक और शून्य का गणित। रैखिक और द्विघात समीकरणों का हल। चक्रीय चतुर्भुज।
इकाई – 4	पिंगला और बाइनरी प्रणाली ,
इकाई – 5	नारायण पंडित की गणितकौमुदी, भारत में मैजिक स्क्वायर

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1– आर्यभटीयम, आचार्य आर्यभट्ट, चौखम्भा प्रकाशन, बाराणसी।

2– बी. दत्ता और ए. एन. सिंह, हिंदू गणित का इतिहास, 2 भाग, पुनर्मुद्रण, भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।

3– ए. के. बाग, प्राचीन और मध्यकालीन भारत में गणित, चौखंभा, वाराणसी, 1979 ।

4– सी. एन. श्रीनिवास अयंगर, भारतीय गणित का इतिहास, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1967 ।

Essential e-resourses:

Link- NPTEL :: Mathematics - Mathematics in India - From Vedic Period to Modern Times

DShukla Shivamkumar 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester VI

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-611	भारतीय संस्कृति	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) भारतीय गुरुकुल प्रणाली का विस्तृत अध्ययन

(2) वर्णशास्त्र का विस्तृत अध्ययन

(3) पुरुषार्थ चतुष्टय का परिचय

(4) श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन

(5) धर्म के स्वरूप का माहात्म्य

इकाईश शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1)- इकाई-1 के अन्तर्गत भारतीय गुरूकुल प्रणाली की जानकारी।

(UO-2)- इकाई-2 के अन्तर्गत तर्कशास्त्र की सामान्य जानकारी।

(UO-3)- इकाई-3 के अन्तर्गत पुरुषार्थ चतुष्टय का ज्ञान।

(UO-4)- इकाई-4 के अन्तर्गत श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित दैवी और आसुरी सम्पत् का ज्ञान।

(UO-5)- इकाई-5 के अन्तर्गत धर्म के स्वरूप को जानना ।

इकाई - 1	प्राचीन-भारतीय गुरुकुल प्रणाली-नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि का सामान्य परिचय
इकाई - 2	तर्कशास्त्र - प्रमाण, प्रमा, प्रमाता, स्वतः प्रामाण्य, परतः प्रामाण्य
इकाई - 3	पुरुषार्थ चतुष्टय (वर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)
इकाई - 4	श्रीमद्भगवदगीता अध्याय स. 16 दैवी और आसुरी सम्पत्
इकाई - 5	धर्म का स्वरूप-महाभारत, मनुस्मृति, वैशेषिक सूत्र

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. भारतीय संस्कृति – लेखक डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल, प्रकाशन– राजस्थान ग्रंथगार, जोधपुर

DShukla 20/2/25
Shivamkhare 20/02/2025
20/2/25

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester VI

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-SEC-611	प्रायोगिक योग	0	0	2	2	20	20	60	100

उददेश्य – योगा अभ्यासों के माध्यम से सकारात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर स्वास्थ्य समस्याओं की रोकथाम के बारे में ज्ञान प्रदान करना योग अभ्यासों के अंतर्निहित तंत्र का वर्णन करना। योग का उपयोग करके मानव शरीर की विभिन्न प्रणालियों को कैसे मजबूत किया जाए, जिससे उन्हें स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने और सकारात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी ।

- प्रार्थना - मंत्र एवं प्रार्थनाएँ
- अभ्यास प्रारंभ करना - पवन मुक्तासन भाग-1, 2, 3, मार्जरी आसन, ताड़ासन, तिर्यक-ताड़ासन, कटि-चक्रासन।
- सूर्य नमस्कार, प्रज्ञा योग
  मंत्रों एवं श्वास पैटर्न के साथ

आसन :-

उत्कटासन, पादहस्तासन, त्रिकोणासन, मंडूकासन, उत्तान-मंडूकासन, वृषभासन, गुप्तासन, सिंहासन, उष्ट्रासन, सुप्तवज्रासन, वक्रासन, अर्ध-मत्स्येंद्रासन, गोमुखासन, जानुशिरासन, पश्चिमोत्तानासन, चक्रासन, कर्णपीड़ासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, नौकासन ।

- प्राणायाम

  पूरक, रेचक और कुंभक, नाडी–शोधन, उज्जायी, सूर्य और चद्रभेदन, भस्त्रिका, भ्रामरी, शीतली, शीतकारी।

DShukla
20/2/25

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

20/02/2025

School Board Meeting held on 25 February, 2025

The School Board has approved the minute of meeting of BOS of Department of Vedic Studies h eld on 20/02/2025.

Approval online

Prof. A.K. Saxena
External Member
Department of Mathematics, Maharaja Chhatrasal University, Chhatarpur (M.P.)

online

Prof. K.S. Varsney
External Member
HoD Physics, D.S. College, Aligarh, U.P.

online

Prof. Narendra Pandey
External Member
Department of Physics,
University of Lucknow (U.P.)

25/2/25

Prof. Diwakar Shukla
Member
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. Ashish Verma
Member
HoD, Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. Ranveer Kumar
Member
HoD, Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. U.K. Patil
Member
Department of Pharmaceutical Science,
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. R.K. Rawat
Member
Department of Applied Geology,
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/02/25

Dr. Rekha Garg Solanki
Member & Associate Professor
Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. U.K. Khedlekar
Member
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Dr. Abhishek Bansal
Member & Associate Professor
HoD, Department of Computer Science & Applications
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/02/25

Dr. Shivani Khare
Member & Assistant Professor
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Dr. Mahesh Kumar Yadav
Member & Assistant Professor
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/02/2025

Mr. Kamal Kant Ahirwar
Member
Department of Computer Science & Applications
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25.02.2025

Dr. Maheshwar Panda
Member & Assistant Professor
Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. R.K. Gangele
Chairman, School Board & Dean, SMPS
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

अधिष्ठाता/Dean
गणितीय एवं भौतिक विज्ञान अध्ययनशाला
School of Mathematical & Physical Science
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar